

आशा प्रकाश

2708

ASHA PRAKASH

प्रसायं न कुरु वी॥ हनाथ हनु प्र हलया लयानि स्यो हसमसि हयायमा लसाने जिमिह हलयाः
 लयानि सन गुणु माल उगु लिय सविष्ठा हन ॥ हलया लयानि स गुणु उगु ॥ वयाया कल्लो गु
 प्रथाले स्यो जिपानि स कार्य स विरु नया ॥ ७ ॥ का विरुया स विष्ठा हन हनाथ हनु वध ॥ २
 क. प्राथनाया ना ॥ धन गुणु यान ॥ किम्वलन न क ॥ ॥ नथ मिथ्यायानि स मा
 ज्ञान स्थान दू वर्य लावना ॥ ॥ नना हि ना स विम धु लरु ह का प्र के प्र दी ह ह न ह का प्र
 ह न ह ह विरु न न यं न रा न वरुष ही उरु क र्म ॥ यि म प्र व र्य यं ना सि का गु रा ॥ नि वार्य न थ ह

का प्र ह दि नि ला पा नि ना स य क मान वरु ह का प्र म हा का ध वि ला य ॥ ॥ वा दि नि ला स ॥ ॥
 वलं व न हा य ॥ उं स क ने स क ह २ ह ॥ उं गृ क २ ह २ ह ॥ उं गृ क २ ह २ ह ॥ उं गृ क २ ह २ ह ॥ उं गृ क २ ह २ ह ॥
 वरु वि या ना उ ह दान पा नि य था मान स ॥ सर्व पा र्थ ना भ य ह २ ह २ ह ॥ ॥ धन म धुः
 ला वि स र्ज न या न क ॥ य थ र ग ह्या वि य ॥ ॥ वा दि नि ला उ न प्रा हा मि य का व ड ॥ ॥ ल य
 स न ह का य ॥ ॥ धन थ का लि न किं नि स स न व ल म धु ल क य क पृ क या न क ॥ ॥ न ल म धु ल
 या व क न ॥ ० ॥ ॥ ह मि थ्या र्थ थ व ल म धु ल ग थ थो क सा का यो म म धु ल या थ थ या

दडा न वायु मधुल थया दडा न मृषिमधुल थया दडा न आय मधुल थया दडा न युथो मधुल थ
 या दथ स सु मयुव न ग रथ बांधल सा था ला लया र्थो पूर्व सविद ह म या नु दी य द या र्थो नूनाः
 न लया र्थो दकि ह ज दू दी य थ या नु दः या र्थो निको ग वान लया र्थो या थि म मयु २ ग म
 दा नो ने थ या नु ला क ला ना थो उरु न क मयु वं थ या नु य कं ला ना थो थ नी लि वि दि ग क
 न सु उ य दी य थ या नु य थ लं द या र्थो ह नं थ नी यि यु व स ग रु न ल थ या नु कि सि द या र्थो पु
 यु व रू रू या र्थो दं म य द या र्थो न ल या नि सो ने या र्थो कि दि या रि न व स समु डां न उ ल ह या र्थो

दकि ल स मयु व ल थ या नु स ल ह म द या र्थो स र वा या न ल या न थं र्थो रू रू रु या र्थो न व न
 न या नि सो न नि या र्थो कि दि या रि न व स समु डां न उ ल ह या र्थो या रि म स यु व स ल ह म द या र्थो
 स क व रू रू या र्थो मयु वं न ला ना र्थो यु थि मधुल म कि न य या य द या र्थो उरु व स वि न
 ल थ या नु ला क म य मयु मयु थ थि गु व रू रू या र्थो ऊ डा क थं स काले श वि ना र्थो व या या
 थि गु र्थो मि ला सिं ह या थि गु रु दा रु या र्थो ऊ रु म र्थो डा व रू या व रू या थ न अ ग या र्थो या
 ना र्थो द द रु या र्थो ना ली रू डा य र्थो वि ली क्ता ना र्थो व स या स रू व रु या र्थो ह नं वि दि ग स मयु
 उ य दी य व न व ल थ या नु द या र्थो थ रु य ग र थ थ ल सा व न ऊ ना डा थ अ म नं हा ल या नु या क व

नस्ययाहस्य। मरुयूज। विसेकृत। यथा गत्यविद्य। वरुनालनामनहंताया। थनमविधुलिवा
 दयलनायाविय। वायव्य। ॥ अक्षधर्मागसंरुनं हानवयो विभाधकं। समरुहदवावागं। रा
 त्रमउलमरुमं॥ ॥ मूलमउलस खानद्वलदयकं नय॥ वाक॥ ॐ मूसाघयामम
 लुलसर्वविघ्नान्सात्रयहं॥ मउलदय कं अय॥ ॐ मूसाघयामलाकमेनायवजयुष्ययुः
 निहृखाहा॥ दथ॥ ॐ उंलाकाविजयायमू माघयामयनिहनकीहहं हृखाहा॥ दथ॥ ॐ मूः
 माघयामकीहृखाहा॥ दथ॥ ॐ मूयाममृनाहायवजयुष्ययुनिहृखाहा॥ हउन॥ ॐ मूयामनायत
 अयादि॥ स्वउस॥ ॐ मूयामरुहृदि॥ खाहा॥ थउन॥ ॐ मूयाममाघयामय॥ खाहा॥ कउस॥

ॐ मूयामसधनाय॥ खाहा॥ स्वउकथुं॥ ॐ मूयाममाघयामय॥ खाहा॥ स्वउथथुं॥ ॐ मूयामला
 कमेनाय॥ खाहा॥ कउथथुं॥ ॐ मूयामगारुय॥ खाहा॥ कउकथुं॥ यत्कयहात्रयूजा॥ सुनि
 लाकमेनां मेनामं मूसाघमुदासागत्रं मूसागरुहकनं मोलेनमां मेमूसाघयामनं॥
 कीकात्रंसकवनाथं कनूनामिधमानसं मूसाघयामनामाना लाकनाथं नमास्यहं॥
 ॥ थन॥ दथ॥ सनांगु वरुमउलखानकाय ॥ ॐ वरुमउलसर्वविघ्नान्सात्रयहं॥ मउल
 दयकानय॥ ॐ मूवेनायवजयुष्ययुनिहृखाहा॥ दथ॥ ॐ मूकायायवज॥ हउन॥ ॐ
 मूहवलसंरुवाय॥ खाहा॥ ॐ मू॥ मूसाघयामय॥ थउन॥ ॐ मू॥ मूसाघयामय॥ खाहा॥

ॐ शारंगमासकि यः ॥ अथ अथ ॥ ॐ शारंगलावनाय ॥ अथ अथ ॥ ॐ शारंगनावाय ॥ अथ अथ ॥
 ॐ ॥ यं चायदा प्रयुजा ॥ सुति ॥ रुद्रादिस्तु समादिक प्रसिद्धं संयुधययत्तु न कामकाद विषयं वि
 नर्कदशनं नागपयत्तु रुद्रादि ॥ साहस्य सागे ॥ विलकारु प्रसयं विष्णुपरीदा प्रदीपु हामस्तु
 वलनयः समेता वां वृद्धाय न सो नमः ॥ ॥ धनदक ॥ साहं नवनासा उवद निनाः
 ॥ ॐ सां देव समयादाय ॥ ॥ दनाथरुद्रः ॥ ॥ किमिदं यति यादि न निरा थडा रनामने
 ॥ ॐ ॥ अथ अथ ॥ लिख्यते ॥ ॐ ॥ या निमिदि दमनाया हा ॥ या वदा काधि मधु या निषर्ष वृद्धार
 गवर्क ॥ ॐ ॥ अथ अथ ॥ रुद्रावापया ॥ साहस्य रुद्र मद्र नर्क ॥ दशनया ना ॥ वृद्धारु गवर्क महाका प्र

मिकं ॥ अथ रुद्रावापया ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥
 सर्वदामेनं अलि यकाय अन्तु नकाय ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥
 ॐ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥
 वृद्धन प्रदीप मिदीय दाना मयं ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 ॐ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥ अथ अथ ॥
 ननाथ मम मल्लि सर्व विद्या नत्ता प्रयहं ॥ धर्म मल्लि उदयक पीजा मनेय ॥ ॐ शारंगपुत्र
 धाम मिता ये वज्रयुधं यति रुद्राहा ॥ दधु ॥ ॐ शारंगान्धवृद्धाय ॥ स्वाहा ॥ ॐ शारंग ॥

हा। ख। अ। क। थू। कं। ॐ। आर्य। सर्व। धा। व। न। सा। वि। लो। हे। न। x। स्वाहा। ॥ ख। अ। थ। थू। कं। ॐ। आर्य। त्रि। नि। ग। र्हा। य। x। स्वाहा। ॥ ३।

[illegible]

वसत्यसूत्यादावेदमिगः तन्नामधेयः

शिवलयः कलारुमावता, यस्मिन्नास्था

नमः॥ ॥ धनत्वकनससाहंम

वदावाधिमल्लनिघ्नः ॥ हनुमन्नाथ, किमिह न, अश्वनामन, किथनाउ, धानिया, दनस, थ

[illegible]

सतिना समप्रसा. कामसा योगिनः ४५ ॥ ५५ ॥

कृता यस्तु लसमाधिनकवयूष संघायनम्

वनामा जवंद निमाह्व मंदिव भेसया दाय ॥ या

मनः प्रअश्नामनः प्रिथनाउ. धानेया. दनस. थ

॥ अत्रैवार्हिकसंघमयर्षीगच्छामि

य इति आर्यावलादिकेभ्यः नृवदरिक्तकाले सखमत्तनमर्गं ॥ यत्नानं प्रवेत्तुं कर्तव्यमिति

माने, सत्र सज्जन, संघ हयगार्थ, अलसा, आर्यावत्, किं न्यत्रं, सत्रया, सिया, न, आ, क, य, न, नि, य

कर्म. धर्म. संघ. शा. भ. व. लो. ज्योति. वि. स. ३

कसन्नियमिका. वृक्षावगावन्ताकाधिसुखाय

दशसुखेकवृद्धिर्वातसुख्यानेषु

अथ मात॥ ॥ अहमवनासायाकाश्चकायवाकनोहःसर्ववृद्धवाधिसत्वा,मानायेनना,न
हमायमाजहहमायेनवाकनयसयायायकं कर्मकर्मकायेनोदव॥ हमायहमायहिसि

दत्तासुखी... एवमिति

विष्णुसामान्यः ॥ समन्वाह ननु सा द्वादिगुणा

श्रुतायायाय॥ हनकिमिशं. प्रकमनयाहा. मिगु

इलयालमुडयायानरहाजयानरहा
महाजयानरहाजयानरहा

वाक् नो हः स च वृद्ध वा धि सुत्वा, मोक्षा यन नो हः
८ कर्म कर्म का वि मो ह व ॥ इमा थ ह मा न डि सि

न. कान्तकृतं वाचनं गीतं च सनातनसंस्कृतं नाम

[illegible][illegible]

13

नयान्नयः ॥ अविद्यायादं मिथ्यादृष्टिर्विर्जं कृदिशब्दयश्च कर्मयायः भज्या महिन
 सायध्वस्यमा नृमनन्यानायायध्वमिनायप्रमालनमालहोमेष्यानेधकगुब्दश्राद्ध
 यकन ॥ ॥ अन्ननाहं कृत्स्नमोगनः कः
 हनाथहगुब्दकिमिमनध्वमरीत्रमिना
 ना ॥ अथानुसयालयनिर्वाङ्कृतिमयाय
 विद्यायमलध्वकमिथ्यगुब्दयामात्रेननिर्वाकं ॥ ॥ केचनननममकात्रयाययननिय
 दृष्टान्नयानवीयमन्य ॥ ॥ उन्नमन्नययानममकात्रयाययननिय

विद्यासंज्ञा रुद्राचारिणः कथमनन्तरा कतिपयसिद्धिर्वाप्यते सुखमयः सत्यप्राप्तौ वा लसकविर्हृत्पुत्रः रुद्रा
अथाह दयमानं मनुष्याणां दत्तमात्रं सन्तुष्टायार्थं कथमनन्तरा कतिपयसिद्धिर्वाप्यते सुखमयः सत्यप्राप्तौ वा लसकविर्हृत्पुत्रः रुद्रा
वयस्यनं विद्यासंज्ञा कथाया विरुद्धाया रेखाया
कथयतु ॥ याधधीना संधाधिगुलिधर्ममया
यान् समस्तान् ज्ञानाय यान् मसस्तुष्टाये
गुलिधर्ममया यान् ज्ञानाय यान् मसस्तुष्टाये
धनयवावरावृणा याधधीना संधाधिगुलिधर्ममया
विद्यासंज्ञा कथाया विरुद्धाया रेखाया
कथयतु ॥ याधधीना संधाधिगुलिधर्ममया
यान् समस्तान् ज्ञानाय यान् मसस्तुष्टाये
गुलिधर्ममया यान् ज्ञानाय यान् मसस्तुष्टाये

५

धनयवावरावृणा याधधीना संधाधिगुलिधर्ममया
विद्यासंज्ञा कथाया विरुद्धाया रेखाया
कथयतु ॥ याधधीना संधाधिगुलिधर्ममया
यान् समस्तान् ज्ञानाय यान् मसस्तुष्टाये
गुलिधर्ममया यान् ज्ञानाय यान् मसस्तुष्टाये
धनयवावरावृणा याधधीना संधाधिगुलिधर्ममया
विद्यासंज्ञा कथाया विरुद्धाया रेखाया
कथयतु ॥ याधधीना संधाधिगुलिधर्ममया
यान् समस्तान् ज्ञानाय यान् मसस्तुष्टाये
गुलिधर्ममया यान् ज्ञानाय यान् मसस्तुष्टाये

मित्रमयुक्तं सन्निहितं ॥ नानादिभिर्योग्यं कथं प्रकृतं यथा ॥ तत्रैकं प्रकृतं नाना ॥
 लक्ष्म्यं मन्त्रं धितं किं नन ॥ जगत्तादित्यं नन नमस्तस्मै ॥ ॐ नमः ॥ आयम
 नुयमेवमय ॥ २ ॥ ॐ नमः ॥ आयकर्म वनाय ॥ ॥ रुसुवकायुखु ॥ ॥ रुनावेममरु ॥
 नात्रकमत्रमृता ॥ आयदिवकयादं ॥ रुमिपत्रिरुवं ॥ रुसुकाकासदम ॥ मरुसेव
 डवृत्ता ॥ रुतमदिसमिदं ॥ रुमवमं ता ॥ विंवा ॥ रुसा ॥ रुकु ॥ रुयद ॥ नवकु ॥ रुगावक ॥ पमन
 ॥ मत्ररु ॥ ॥ रुयिवा ॥ यासासंसाप्रचक्र ॥ विप्रचयमिमन ॥ साकेयाममदना ॥ साधयसुप्रसा
 दादिसुनिजकुवं ॥ सामिनामिथुप ॥ नचप्रसासवेयं ॥ समदयमिसुवं ॥ कल्पमाया लमर्क

१७

कर्माख्यापिपयं मित्रसिचविरयं सकुप्रसर्वकात्रं ॥ ॐ नमः ॥ आयमनुयमेवमय ॥ २ ॥ ॐ नमः ॥
 गावकुसं वनाय ॥ ॥ मत्ररु ॥ नाना ॥ ॥ रुयिवा ॥ यासासंसाप्रचक्र ॥ विप्रचयमिमन ॥ साकेयाममदना ॥ साधयसुप्रसा
 दादिसुनिजकुवं ॥ सामिनामिथुप ॥ नचप्रसासवेयं ॥ समदयमिसुवं ॥ कल्पमाया लमर्क
 ॥ मत्ररु ॥ ॥ रुयिवा ॥ यासासंसाप्रचक्र ॥ विप्रचयमिमन ॥ साकेयाममदना ॥ साधयसुप्रसा
 दादिसुनिजकुवं ॥ सामिनामिथुप ॥ नचप्रसासवेयं ॥ समदयमिसुवं ॥ कल्पमाया लमर्क

दवपुत्रा...
 का...
 या...
 का...
 क...
 ॥ न...
 थि...
 यार्थ...

ध...
 न...
 ध...
 ध...
 ध...
 ध...

[illegible][illegible]

सर्वज्ञाय नमः ॥

卷之四

मन्माद्यङ्गत्वर्यवृद्धत्वादिदधमन॥

उद्भवः प्रसिद्धः न. व. स. ग. म. म. म. म. म. म.

गङ्गा नदी का जल संपूर्ण भारत में फैला हुआ है।

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ हना मसि गुद न देया नारी ॥ अथ विष्णु उवाच ॥ हन उवाच

समयसिद्धि

॥ दक्षिणा ॥

Figure 1. The effect of the concentration of the inhibitor on the rate of polymerization of the monomer.

समस्तप्रभुसं सत्

यत्नात्प्रादाय यावदाकाशिमर्त्यं निरुत्तमम्

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

उत्पादयामि यत्र संजायिष्ये ३

मनूरुनं यथादियधनाथनां संकरधेन निशयं ॥ १ ॥
 सत्कथं करुणामाहं पुनिगुणात्
 वंद्यं वृद्धधर्मसंयं विप्रहाणमनूरु
 वं भूयात्पुनगुहियामि सत्कथं वृद्धधर्मसंयं
 वंद्यं वृद्धधर्मसंयं विप्रहाणमनूरु
 वं भूयात्पुनगुहियामि सत्कथं वृद्धधर्मसंयं

२३

नलन। श्रुतार्थकगुहीयामि महावज्रकुलावयम् ॥ १ ॥
 यनं वृद्धधर्मसंयं विप्रहाणमनूरु
 वंद्यं वृद्धधर्मसंयं विप्रहाणमनूरु
 वं भूयात्पुनगुहियामि सत्कथं वृद्धधर्मसंयं
 वंद्यं वृद्धधर्मसंयं विप्रहाणमनूरु
 वं भूयात्पुनगुहियामि सत्कथं वृद्धधर्मसंयं

सचनं सर्वसंयुक्तं यन्निगृह्णामि न च त्रु ॥ १ ॥
 योजाकर्तव्यं यथासंभवमहो कर्म कृत्वा च यथा ॥
 उवाच दया मे यत्र मं वा विविह स मरुतं ॥ २३ ॥
 मृहीत्वा स मे यत्र हर्षं सर्वस्यार्थ ॥
 मृहीत्वा स्तानां येषामि मृमृता सा वया मर्ह ॥
 मृहीत्वा स्तानां येषामि मृमृता सा वया मर्ह ॥

२३

मृमृता सा वया मर्ह ॥ २४ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ २५ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ २६ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ २७ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ २८ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ २९ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ ३० ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ ३१ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ ३२ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ ३३ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ ३४ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ ३५ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ ३६ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ ३७ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ ३८ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ ३९ ॥
 मृमृता सा वया मर्ह ॥ ४० ॥

॥ ओं वज्रहास हूं ॥ ओं कीर्ति धु दधर्म सर्व पापानि क्षय विनाशने
विकल्पा नयन यहाँ ॥ धनद क कूर

॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ इति श्रीगणेशपूजास्तोत्रम् ॥

[illegible][illegible]

[illegible]

अ. पूर्व यावत्तु स्वाव न ॥ अं वडा या पाटय समययुवमयहं ॥ अमकुन वरु दान संव न ॥ अरान
 मातामलुलसमुत्ता जयाना वमनं जाया य ॥ ययमसुत्त संय. सुत्र विना विनासमि न
 नमामि ॥ ४४ हं वं हा ॥ ही ही ही ही यमि दू सुमां जलिना थं हा ॥ नृश्रमूडा का सं. लन पमं दू व ॥
 अं वज नृश्रमूडा ॥ हं नमलुलसवा ड ड ल ॥ ता ॥ ॥ आकात्म जाद विरु नां र नादि नि
 धन यन ॥ महाज समयसुत्व मूका ख वज सिद्धि म ॥ सर्व रु म म सा सिद्धि सा हे भय्या दि दे
 वरु ॥ सर्व वज धन यजा सिद्धि मय प्रमा रु व ॥ नि धोष मा ग्वे नृश्रायि. सर्व ना म नृनामान ॥ न
 त्व ॥ सिद्धि मरु गा व न महा ना र म नृनामान ॥ श्रुत क ड ड धर्मा र ग्रादि मूक स थ ग न ॥ सम

[illegible][illegible]

वसुधैव कुटुम्बकम्
मम पुत्राय वरुणात्मने नैऋत्यामि सर्व

नमामि शिवाय वरुणाय वसुधैव कुटुम्बकम्
नमः ॥ ३० ॥ सर्वतथा
नमः ॥ ३० ॥ सर्वतथा

30

आधियदं ॥ ३० ॥ सर्वतथा
मम पुत्राय वरुणात्मने नैऋत्यामि सर्व

नमामि शिवाय वरुणाय वसुधैव कुटुम्बकम्
नमः ॥ ३० ॥ सर्वतथा

वसुधैव कुटुम्बकम्
मम पुत्राय वरुणात्मने नैऋत्यामि सर्व
आधियदं ॥ ३० ॥ सर्वतथा
मम पुत्राय वरुणात्मने नैऋत्यामि सर्व

नमामि शिवाय वरुणाय वसुधैव कुटुम्बकम्
नमः ॥ ३० ॥ सर्वतथा
नमः ॥ ३० ॥ सर्वतथा

[illegible][illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

वसुधाया नमः ॥ मित्रमनुसुतं नमः ॥ १ ॥	॥ अथ यमसुतं सत्यं यागिष्यं वमिनीं ॥ यमपूर्यं
मथारुः दवमानं सुतं नमः ॥ यादृशो दिव्यदस्य ॥ यमयसि अरुतं नमः ॥ यादृशं नमः ॥	॥ यादृशं नमः ॥ यादृशं नमः ॥
दमया कुमसुतं ॥ यमयुगं यातनया नमः	॥ यादृशं नमः ॥ यादृशं नमः ॥
कं मथ ॥ उं विदुवजदयं मरुवदयं मरु	॥ यादृशं नमः ॥ यादृशं नमः ॥
वीर्यं पुमिदं कसुमा अलिनाथ ॥ यादृ	॥ यादृशं नमः ॥ यादृशं नमः ॥
कयः मरुः ॥ रुद्रा मरुः ॥ विसे नमः ॥	॥ यादृशं नमः ॥ यादृशं नमः ॥
लज्जा वक नमः ॥	॥ यादृशं नमः ॥ यादृशं नमः ॥

या ॥ यमि नमः ॥ यमि नमः ॥	॥ यादृशं नमः ॥ यादृशं नमः ॥
विदुवजदयं मरुवदयं मरु	॥ यादृशं नमः ॥ यादृशं नमः ॥
वीर्यं पुमिदं कसुमा अलिनाथ ॥ यादृ	॥ यादृशं नमः ॥ यादृशं नमः ॥
कयः मरुः ॥ रुद्रा मरुः ॥ विसे नमः ॥	॥ यादृशं नमः ॥ यादृशं नमः ॥
लज्जा वक नमः ॥	॥ यादृशं नमः ॥ यादृशं नमः ॥

38

[illegible]

26

नेव संहाताम संहातामि तु यत्ना मृदुनि क सुव प्रता संकाय सा प्रिम सुतं रूपा वरा व द्रुम सुतं
 न नम रश्मि रूपा व काली आसीद वाय यो रुग व कं ह सुव र्णं व रु स र्वं ॥ कृष्ण स न कृष्णी मं पुनि म र्वं
 विन गुं ऊटा म कूट ध प्रं विम व ज अर्च व दृष्टा द मे सुतं सुत रु जन व ज द्रु ल ध प्रं ॥ व ज वा
 नाहि न विम ना विनी य सु ज द य न ग ज व म्प ध प्रं ॥ रु नी य सु ज न उ म व र्व द्वा ग ध प्रं ॥ व रु थ
 सु ज द य न क र्ति क पा ल ध प्रं ॥ य थ म सु ज द यं ने य व रु या व ध प्रं ॥ य थ म सु रु न वि म न
 व रु ल वि म ध प्रं ॥ य थ म डा वि ल वि मं ॥ म ना र्च म सु मा ल र्च नं ॥ वा यु व म्प क र्ति वि ल नं ॥ य थ म ना य व
 र्णा र्च नं ॥ व रु ल उ हा वा व लि रु ग व क मि नि ॥ अ न र्च नं ॥ म र्च नं ॥ व रु ल उ हा व क नं ॥ य थ म ना य व

पद्मभाक्तकनारीसंनिधायप्राप्तिः मन्त्रमन्त्रिभिः

नामा कौस्तुभे नदीजनस्यानीयः हानसत्त्वः

हनुमन्संयुक्तः ॥ १ ॥

गन्ताधियानिःकनहशमरुवः

हिं वरुणं दद्यात् ॥ दद्यात् सर्ववृद्धान् विमुक्ता

महासुखवज्रसत्वाधेयकनत्वामारुषिष्णामि सर्वमम्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

लघुसंस्कृतं

ॐ व आ द का ऐ पिं च स न ज त्व म हं ए ऊ ऋ ऌ उ द जा ऋ

अक ॥ ॥ आदर्भनहनै.श्रुविद्यामप्रकालश्रुकाष्टसुखवै.नयाभनधनायमेदीयाहैवक ॥

॥ यथाशिवः शिवं वदति तथैव महादेवः । मया येन ज्ञायमानं तर्ह्यस्य वज्रं दिदृक्षुः ॥

1. **Introduction**

[illegible]

संरुचनूर्यनि, हनसखनेकीरुमं, नरुच, न

हिः ययानियमानं मङ्गलगीर्णं रुतयः ॥

दिनत्रयसंबवर्जनस्यलवंसनसत्तत्रय

मवध्यात्वा. मकूटं यस्याभिजसा मध्या. लः

同治庚午年

आमानदविहिःकुरुहिकमानेनूयवदमादि

आध्यात्मिकनामनक्षत्रचक्रनक्षत्रचक्रादि

यश्च मन्त्रागतेऽस्य मन्त्रादिनाभिधायकवर्तिनः

ॐ कृष्णदेवी नमः । विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम् ।

43

समस्त समस्त समादृतुं तिस्रो मन्त्रवर्गान् ।

ॐ यत्रिसामग्र्यमुत्तमं यत्तु सत्त्वादिनैः कृत्वा वर्ज्यं वा मृत्वा राक्षसीं वै विंशत्युत्तरे च कंसं सत्त्वादि

वज्रविदामि॥ वज्रमदा॥ वज्रकाकना॥ वज्रयुनाका॥ वज्रमाया॥ वज्रादया॥

वज्रनेनाका॥ वज्ररुहा॥ वज्रावलि॥ वज्रदालि॥ वज्रसामादि॥ वज्रप्रति॥

वज्रदाकिनि॥ वज्ररामादि॥ वज्र

लाभा॥ वज्रप्रयत्ना॥ माहप्रति॥

वज्रहास॥ वज्रमेवसा॥ वज्र

हाला॥ वज्रकासा॥ वज्रमासा॥ वज्रकाभप्रति॥

वज्रयामा॥ वज्रग

हासला॥ वज्रवतापि॥ वज्रप्रति॥ वज्रहासला॥

वज्रमातंदा॥ वागप्रति॥

वज्रगंधा॥ वज्रवदना॥ वज्रमाया॥ वज्रमायः॥

वज्रनर्क्यापि॥ समयवज्र॥ वज्रप्रति॥

वज्रनामादि॥ वज्रप्रति॥

४०

वज्रमहा॥ वज्रनधर्मकाशीन॥ वज्रमुखाकनादिना॥

वज्रनेनंप्रहासप्रधर्मभ्रातृगतिंगना॥

वज्रनिनामादि॥ वज्र

वज्रमाहा॥ वज्रमहा॥ वज्रमाहा॥ वज्रमाहा॥

वज्रनेनंप्रहासप्रधर्मभ्रातृगतिंगना॥

वज्रमाहा॥ वज्रमाहा॥ वज्रमाहा॥ वज्रमाहा॥

वज्रनेनंप्रहासप्रधर्मभ्रातृगतिंगना॥

वज्रमाहा॥ वज्रमाहा॥ वज्रमाहा॥ वज्रमाहा॥

वज्रनेनंप्रहासप्रधर्मभ्रातृगतिंगना॥

वज्रमाहा॥ वज्रमाहा॥ वज्रमाहा॥ वज्रमाहा॥

वज्रनेनंप्रहासप्रधर्मभ्रातृगतिंगना॥

वज्रमाहा॥ वज्रमाहा॥ वज्रमाहा॥ वज्रमाहा॥

उत्तराखण्ड

𠂔

नरुजमालायां ७

[illegible]

सायान्मासम् ।

विहितायाः

[illegible]

5

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

...मम नृहयेः ...
 संसात्रयेकसंसात्र ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

५१०

धनरुह्यं नृम कुयदयं ...
 मसुखमिति ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

यमसहस्रं कीर्तिनं उमस्वस्व कूलजाना वृद्धयुजास्ति हां पु दंत
 विना गच्छेत्ससमं केन अगता नित्यं निरुद्धं
 मम न सा सा सा धि र्ज क दा उ न ॥
 वृद्धा नां निजा वृद्धा न वृद्धा न ॥

सा निना सुयं मं तु न म ७४
 दंत सुयः
 सा निना मं

यमसहस्रं कीर्तिनं उमस्वस्व कूलजाना वृद्धयुजास्ति हां पु दंत
 विना गच्छेत्ससमं केन अगता नित्यं निरुद्धं
 मम न सा सा सा धि र्ज क दा उ न ॥
 वृद्धा नां निजा वृद्धा न वृद्धा न ॥

सा निना सुयं मं तु न म ७४
 दंत सुयः
 सा निना मं

57 ST

[illegible]

1779-1800

नानिचनश्रुवसिचनशिगना

आद्यस्य श्रीसुवर्णहवनचरित्रस्य आद्यकायस्थप्रायेष्टं श्रीकुरुक्षेत्रे म॥ छिद्यवत्तयादवत्

गहनाम्निता हस्ययसी॥ केकुवनशायतेपूतुयातिरूपवप्रविष्टाकांअनदक्तसमस्तानामिदमेव

[illegible][illegible]

[illegible]

[The text in this section is extremely faded and illegible.]

[illegible]

[Faint handwritten Devanagari script across two horizontal bands.]

...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

...
 ...
 ...
 ...

[illegible][illegible]

उत्पादक सहायक

[illegible]

विहारी ॥ प्रथमः स्कन्धः ॥

न। नया नया मा सुव सत्वयाना नाश्वदगुन

[illegible]

ॐ वं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

वाधिवज्रवृद्धानीयदक्षामहामहामसावित्रनाथयस्वतजादेः

ददादिभ्यः । ह्रस्वैश्च । इति सिं

— 100 —

1999-2000

वि. सं. १९५७-५८

दत्तोऽस्यैषा मिथ्याहेषकार्थः॥

॥ गलति खंडधनवर्षादेरावा ॥

॥ कद नू ख ह दी ज म सु ख प्र स न दि ग्वा र्छ न म र्थ म लो वि द्या

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ वृद्धानामहिवेकस्तु, उग्राध्यायः ॥

किरीम हुमुद हनाथ. क्वांनमगतायेरी. हुमुदमिह. हुमुदकविजा. म. चतुरानममि

महाका. गुणकभयपदरुतधनधर्मसहाहि. गुणकभयपदरुतधनधर्मसहाहि.

विष्णुः शिवः ब्रह्मा विष्णुः शिवः ब्रह्मा

[illegible]

नमो नमो ह्यस्यै यन्नमदायामादयौ

हय.वेवावनदाप्रभाकनितमयुवकसारगले

नृद्वेदवामखनेयतामिहंमिष्यमदिरे

अनामानकमहं वज्जसल्लुक्कस्यः प्रियेनस्य

राष्ट्रं वदन्तं वा प्राहेयुर्गृह्णन्तस्त्वाहे नमस्तेष्वेभ्यः पुनश्चादिहे महेन्द्रहे पद्मनेत्रे नमः

श्रीः ॥ १ ॥ सायनादेविशासदेनयनध्वजयुगाकादितस्तुदेगीननृष्यपुत्रकंकुमादेव। ॥

[illegible][illegible]

वायव्यं विद्यादि कावायादि कायाहुवः॥ आवकवायादियनमन्त्रीनामिह नमस्तुतुमः॥
 कावांमः सदुत्ताननयामाहं ह्यया विद्यानामिह आनंमहिजः विद्यंमहिजः ह्यया विद्यानामिह
 योऽपि वायव्यं कावायादि कायाहुवः॥ आवकवायादियनमन्त्रीनामिह नमस्तुतुमः॥
 यः॥ निम्मादि विदिनसमलुगता
 नवउगाधिं गुरुगुरुनलनाहं ह्यया विद्यानामिह
 नवउगाधिं गुरुगुरुनलनाहं ह्यया विद्यानामिह
 नवउगाधिं गुरुगुरुनलनाहं ह्यया विद्यानामिह
 नवउगाधिं गुरुगुरुनलनाहं ह्यया विद्यानामिह

[illegible]

2

[illegible]

[illegible]

वडस्यहागताकप्यामययनश्रुप्रिस्वयं नृप्रहृतिगतिगतादिनिहायनः ॥ १ ॥
 नृकवर्ग ॥ २ ॥ वयं ॥ ३ ॥ वयं ॥ ४ ॥ वयं ॥ ५ ॥ वयं ॥ ६ ॥ वयं ॥ ७ ॥ वयं ॥ ८ ॥ वयं ॥ ९ ॥ वयं ॥ १० ॥
 उवाच ॥ ११ ॥ वयं ॥ १२ ॥ वयं ॥ १३ ॥ वयं ॥ १४ ॥ वयं ॥ १५ ॥ वयं ॥ १६ ॥ वयं ॥ १७ ॥ वयं ॥ १८ ॥ वयं ॥ १९ ॥ वयं ॥ २० ॥
 श्रुत्वा ॥ २१ ॥ वयं ॥ २२ ॥ वयं ॥ २३ ॥ वयं ॥ २४ ॥ वयं ॥ २५ ॥ वयं ॥ २६ ॥ वयं ॥ २७ ॥ वयं ॥ २८ ॥ वयं ॥ २९ ॥ वयं ॥ ३० ॥
 यत्नः ॥ ३१ ॥ वयं ॥ ३२ ॥ वयं ॥ ३३ ॥ वयं ॥ ३४ ॥ वयं ॥ ३५ ॥ वयं ॥ ३६ ॥ वयं ॥ ३७ ॥ वयं ॥ ३८ ॥ वयं ॥ ३९ ॥ वयं ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥ वयं ॥ ४२ ॥ वयं ॥ ४३ ॥ वयं ॥ ४४ ॥ वयं ॥ ४५ ॥ वयं ॥ ४६ ॥ वयं ॥ ४७ ॥ वयं ॥ ४८ ॥ वयं ॥ ४९ ॥ वयं ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥ वयं ॥ ५२ ॥ वयं ॥ ५३ ॥ वयं ॥ ५४ ॥ वयं ॥ ५५ ॥ वयं ॥ ५६ ॥ वयं ॥ ५७ ॥ वयं ॥ ५८ ॥ वयं ॥ ५९ ॥ वयं ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥ वयं ॥ ६२ ॥ वयं ॥ ६३ ॥ वयं ॥ ६४ ॥ वयं ॥ ६५ ॥ वयं ॥ ६६ ॥ वयं ॥ ६७ ॥ वयं ॥ ६८ ॥ वयं ॥ ६९ ॥ वयं ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥ वयं ॥ ७२ ॥ वयं ॥ ७३ ॥ वयं ॥ ७४ ॥ वयं ॥ ७५ ॥ वयं ॥ ७६ ॥ वयं ॥ ७७ ॥ वयं ॥ ७८ ॥ वयं ॥ ७९ ॥ वयं ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥ वयं ॥ ८२ ॥ वयं ॥ ८३ ॥ वयं ॥ ८४ ॥ वयं ॥ ८५ ॥ वयं ॥ ८६ ॥ वयं ॥ ८७ ॥ वयं ॥ ८८ ॥ वयं ॥ ८९ ॥ वयं ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥ वयं ॥ ९२ ॥ वयं ॥ ९३ ॥ वयं ॥ ९४ ॥ वयं ॥ ९५ ॥ वयं ॥ ९६ ॥ वयं ॥ ९७ ॥ वयं ॥ ९८ ॥ वयं ॥ ९९ ॥ वयं ॥ १०० ॥

48

[illegible]

खविप्रययं लीनं सकार्ष्णदया अंशुता गुणदकिनिवृत्तिपदं प्राप्तायेव रुद्रया आमडाग शुक्र
 यं सहजान्दायवचामह ॥ धनदमयकिनय ॥ सात्रयगुनदि कवाधन कवाधन कवाधन कवाधन
 नकं निष्ठाधिवासन ॥ मधुलथिरु ॥ के तनं यक्ष्यायाया कवाधन कवाधन कवाधन कवाधन
 कृष्ण वाधन निस्त्रा विनयिथक ॥ दगुस कृष्ण वाधन निस्त्रा विनयिथक ॥ दगुस
 विहंता ॥ समयावक ॥ भुवाह निविस्त्रा विहंता ॥ समयावक ॥ भुवाह निविस्त्रा
 धिनि स्त्रानक कृष्ण वाधन निस्त्रा विनयिथक ॥ दगुस कृष्ण वाधन निस्त्रा विनयिथक ॥ दगुस
 आनक धम्पि सी काय अकृष्ण वाधन निस्त्रा विनयिथक ॥ दगुस कृष्ण वाधन निस्त्रा विनयिथक ॥ दगुस

५३

स गम कृष्ण इहाउम जीना दीविनि ॥ १ ॥ संयुक्तं सर्वजगतामिह्यादि ॥ धनयय ॥
 सनेसंज्ञानादत्रयकिनय ॥ धोसंज्ञानादत्रयकिनय ॥ धोसंज्ञानादत्रयकिनय ॥ धोसंज्ञानादत्रयकिनय ॥
 रुयभीता सादम सुनी ॥ मधुलथिरु ॥ के तनं यक्ष्यायाया कवाधन कवाधन कवाधन कवाधन
 धनीनिसेकाकाकाययन ॥ गुप्सः धनीनिसेकाकाकाययन ॥ गुप्सः
 यमधुलथिरु ॥ विस्त्रा विहंता ॥ समयावक ॥ भुवाह निविस्त्रा विहंता ॥ समयावक ॥ भुवाह निविस्त्रा
 जागदवयुजा मधुलथिरु ॥ विस्त्रा विहंता ॥ समयावक ॥ भुवाह निविस्त्रा विहंता ॥ समयावक ॥ भुवाह निविस्त्रा
 विनयिथक ॥ दगुस कृष्ण वाधन निस्त्रा विनयिथक ॥ दगुस कृष्ण वाधन निस्त्रा विनयिथक ॥ दगुस कृष्ण वाधन निस्त्रा

विद्यासिधन्तनित्यासिकाया लडा क्रायकाया कं स पाकया आदि शुभमीन धन र सा ल
 हिय, गीत। सजह नरा। समया न क। वि स रू न। सै हा न या य। गीत क य २। सा ल क य।
 जा जा या य। गीत मू र ना वि। वारि शु
 काय विधि ॥ ० ॥ सि का इति ना
 प्र म धु ल. स सा धि वा ले. अ क. य। गु प्र
 सि धु न य। म धु ल। धि ले. वि स रू न। स मा धि. भा हा नि सा धन। कु म. स धं. म क. आ धि. गु का। य क
 पू जा। क म थं पू जा। ० ॥ सि धु भा कू य धु न. का यां मि थं स उ ना ज। भा ल कू य। न क रू न

४३

कात्रय क रु प्या द व रा स मा ल मू न सि धु पू जा रा कं स पा क न या. सा प्र का य. स म या व क. मा स च
 क। लि हा उ या उ। म स व ल्या ध्व न। ३० रु ना द। सु भि नि सि धु भा प्र कू य वि धि ॥ ० ॥ ध न गु
 प्र स य धु न. सा प्र यू जा कालं. अ या क ल स
 पू जा। म धु ल। धि ले. कि म न. स धं न या।
 का य माल। स म या व क। वि स रू न।
 स धं वि य। म स न क गु प्र या। लि ध्य न रु का. गु प्र या क इ ता वि य।

॥ सु भि नि गु प्र स य वि धि ॥

[illegible]

ASHA ARCHIVES

आम्रक

2.708